==

AVYAKT MURLI

04 / 02 / 75

==

04-02-75 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

ज्ञान को स्वयं में समाने से ही अनमोल मोती और अमोघ शक्ति की प्राप्ति

ज्ञान का खज़ाना देकर सदा-खुश बनाने वाले तथा सर्व शक्तियाँ देने वाले शिव बाबा बोले -

अभी संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें इस समय चातक के समान है जैसे सीप के लिये कहते हैं कि हर बूँद को स्वयं में समाने से मोती बना देती हैं, ऐसे ही आप सभी भी जो ज्ञान के बोल व महावाक्य सुनते हो और धारण करते हो, वह एक-एक बोल क्या बन जाता है? आप भी उसे मोती बना देते हैं और यहाँ एक-एक बोल पदम्-पति बनाने वाला बन जाता है। एक-एक बोल अमूल्य तब बनता है जब उसे धारण करते हो। जैसे चातक बूँद को धारण कर लेते हैं, वैसे ही आप भी इस ज्ञान को सुनकर समा लेते हो। समाने का प्रत्यक्ष स्वरूप क्या दिखाई देता है? ऐसे हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म पदमों के जमा करने का आधार बन जाता है। अर्थात् हर

रहेगा। यहाँ भी यदि माया का कोई कर्ज होता है तो कर्जदार बार-बार तंग करते हैं। ऐसे कर्ज को मर्ज कहा जाता है।

यहाँ भी माया का कोई कर्ज पुराने खाते में रहा हुआ है, तब ही माया बार-बार परेशान करती है व किसी-न-किसी मानसिक कर्ज के रूप में है। वह कर्ज चुक्ता करना पड़ता है। तो अपने खाते को चेक करो कि कोई रहा हुआ कर्ज, संकल्प व संस्कार के रूप में या स्वभाव के रूप में रहा हुआ तो नहीं है? जैसे शारीरिक रोग व कर्ज बुद्धि को एकाग्रचित नहीं करने देता, न चाहते हुए भी अपनी तरफ बार-बार खींच लेता है, ऐसे ही यह मानसिक कर्ज का मर्ज बुद्धि-योग को एकाग्र नहीं करने देता। बल्कि विघ्न रूप बन जाता है।

अभी तो समय की समाप्ति की समीपता है, तो अपने भी सब हिसाब चेक करो और समाप्त करो। हिसाब-किताब आता है ना? मास्टर नॉलेजफुल हो ना? पुराने खाते का कर्ज या तो व्यर्थ संकल्प-विकल्प के रूप में होगा या कोई संस्कार व स्वभाव के रूप में होगा। इन बातों से चेक करो कि संकल्प एक है? याद भी एक को करते हैं, अथवा करना एक को चाहते हैं, होता दूसरा है? अपनी तरफ क्या खींचता है, क्यों खिंचता है? बोझ है कोई, जो अपनी तरफ खींचता है? हल्की चीज कभी भी नीचे नहीं आयेगी, वह चढ़ती कला में ही होगी, किसी भी प्रकार का बोझ, कितना भी ऊपर करना

समानता ही दोनों का समान रूप बनना अर्थात् सम्पूर्ण बनना। योग में और सेवा में जितना समय स्वयं को बिजी रखोगे तो ऑटोमेटिकली कर्जदार को आने की हिम्मत व फुर्सत नहीं मिलेगी। अच्छा!

अव्यक्त वाणी का सार

1. सीप के लिये कहते हैं कि हर बूँद को स्वयं में समाने से मोती बना देते हैं। ऐसे ही आप भी जो ज्ञान के बोल या महावाक्य सुनते हो, उस एक-एक बोल को मोती बना देते हो।

2. जैसे चातक बूँद को धारण कर लेते हैं, वैसे ही आप भी इस ज्ञान को सुनकर समा लेते हो। समाने का प्रत्यक्ष स्वरूप यह है कि हर कर्म पद्मों के जमा करने का आधार बन जाता है।

3. यहाँ भी यदि कोई कर्ज लेता है तो कर्जदार बार-बार तंग करता है। ऐसे कर्ज को मर्ज कहा जाता है। यहाँ भी माया का कोई कर्ज पुराने खाते में रहा हुआ है, तब माया बार-बार परेशान करती है।

4. नॉलेजफुल के साथ-साथ पॉवरफुल भी हो, तब चेंज होगा।

2 हर ______ के ______ का हिसाब ______ करते हो?

3 अभी-अभी ______, अभी-अभी ______ - यह उतार-चढ़ाव अगर ज्यादा होगा तो सोचने, देखने और करने का ______ समय निकालना होगा।

4 चेन्ज तब होंगे जब ______ स्वयं में समायी होंगी, अर्थात् ______ के साथ-साथ ______ दोनों का बैलेन्स चाहिए।

5 आप तो ______ ______ समाप्त कर नया ______, नये खाते बनाने वाले हो।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- योग में और सेवा में जितना समय स्वयं को बिजी रखोगे तो ऑटोमेटिकली कर्जदार को आने की हिम्मत व फुर्सत नहीं मिलेगी।

2 :- यदि पुराने खाते को पूर्ण रीति से चुकता करने की युक्ति नहीं आती है तो यह थोड़ा-सा रहा हुआ खाता बार-बार दिल को खाता रहेगा।

3 :- हल्की चीज कभी भी नीचे नहीं आयेगी, वह चढ़ती कला में ही होगी, किसी भी प्रकार का बोझ, कितना भी हल्का करना चाहे तो हल्का ही जायेगा, बल्कि ऊपर ही आयेगा।

प्रश्न 2 :- सेवा में भी प्लान और प्रैक्टिकल में, संकल्प और कर्म में अन्तर क्यों?

उत्तर 2 :- बाबा कहते है की उस अन्तर का कारण सोचोगे तो स्पष्ट दिखाई देगा कि कोई-न-कोई कमी होने के कारण प्लैन और प्रैक्टिकल में अन्तर होता है। सर्वशक्तियों में से किसी विशेष शक्ति की कमी है। जैसे योद्धा मैदान में सर्वशस्त्रधारी नहीं बन जाते हैं तो समय पर किसी साधारण शस्त्र की भी आवश्यकता पड़ जाती है तो उन्हें साधारण शस्त्र की कमी भी बहुत नुकसान कर देती है। यहाँ भी सर्वशक्तियों का समूह चाहिए अर्थात् सर्व-शस्त्रधारी चाहिये।

प्रश्न 3 :- समाने का प्रत्यक्ष स्वरूप क्या दिखाई देता है?

उत्तर 3 :- समाने का प्रत्यक्ष स्वरूप यह है कि हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म पदमों के जमा करने का आधार बन जाता है। अर्थात् हर सेकेण्ड के बोल में वह आत्मा पदम-पति स्वरूप में दिखाई देती है। स्थूल धन का नशा और खुशी चेहरे पर चमकती हुई दिखाई देती है लेकिन होती वह

❺ अभी तो समय की समाप्ति की समीपता है, तो अपने भी सब हिसाब चेक करो और समाप्त करो। हिसाब-किताब आता है ना? मास्टर नॉलेजफुल हो ना?

❻ पुराने खाते का कर्ज या तो व्यर्थ संकल्प-विकल्प के रूप में होगा या कोई संस्कार व स्वभाव के रूप में होगा।

प्रश्न 5 :- नॉलेजफुल और पॉवरफुल की रिजल्ट के बारे में आज बाबा के महावाक्य क्या है?

उत्तर 5 :- नॉलेजफुल और पॉवरफुल की रिजल्ट के बारे में आज बाबा के महावाक्य निम्न है:-

❶ अगर नॉलेजफुल 75% और पॉवरफुल में तीन-चार मार्क्स भी कम हैं, तो भी बैलेन्स बराबर-बराबर चाहिए।

❷ नॉलेजफुल का रिजल्ट है - प्लैनिंग, पॉवरफुल की रिजल्ट है - प्रैक्टिकल।

❸ नॉलेजफुल का रिजल्ट है - संकल्प और पॉवरफुल का रिजल्ट है - स्वरूप में आना।

❹ दोनों की समीपता और समानता ही दोनों का समान रूप बनना अर्थात् सम्पूर्ण बनना।

सर्वशक्तियाँ / नॉलेजफुल / पॉवरफुल

5 आप तो _____ _____ समाप्त कर नया _____, नये खाते बनाने वाले हो।

पुराने / खाते / जन्म

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:- 【✔】 【✖】

1 :- योग में और सेवा में जितना समय स्वयं को बिजी रखोगे तो ऑटोमेटिकली कर्जदार को आने की हिम्मत व फुर्सत नहीं मिलेगी। 【✔】

2 :- यदि पुराने खाते को पूर्ण रीति से चुकता करने की युक्ति नहीं आती है तो यह थोड़ा-सा रहा हुआ खाता बार-बार दिल को खाता रहेगा। 【✔】

3 :- हल्की चीज कभी भी नीचे नहीं आयेगी, वह चढ़ती कला में ही होगी, किसी भी प्रकार का बोझ, कितना भी हल्का करना चाहे तो हल्का नही जायेगा, बल्कि ऊपर ही आयेगा। 【✖】